ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 270-272**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

पितृसत्तात्मकता एवं रजिया सुल्तान का शासनकाल : एक ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ० अभिषेक आर्ष

असिस्टेन्ट प्रोफेसर – इतिहास, कमला देवी बाजोरिया डिग्री कालेज, दुबहर, बलिया, (उ०प्र०) भारत

Received-16.12.2024, Revised-22.12.2024, Accepted-27.12.2024 **E-mail : aaryvart2013@gmail.com**

सारांश : ***हमारा देश भारतवर्ष अपने प्राचीनतम सभ्यता काल से ही मातृशक्ति प्रधान समाज को प्रतिबिंबित करता रहा है। अति प्राचीन काल में विदुषी महिलाओं लोपामुद्रा, गार्गी, अपाला, मैत्रेयी, घोषा एवं विश्वंभरा का वर्णन मिलता है, साथ ही भरत (जिनके नाम पर देश का नाम भारत पड़ा) की माता शकुंतला, शांतनु पत्नी सत्यवती आदि के राजकीय कार्यों में हस्तक्षेप के उदाहरण मिलते हैं। महिला सशक्तिकरण एवं सम्मान की जो परंपरा सिंधु घाटी सभ्यता से पूर्व वैदिक काल तक चली उसका उत्तर वैदिक काल आते आते पतन होने लगा। अब महिलाओं के अधिकार सीमित हो गए, पुत्र की प्रधानता एवं महिलाओं को एक संतान उत्पत्ति का माध्यम एवं उपभोग तथा विलास की वस्तु माना जाने लगा (यादव, 2017)। अरब एवं तुर्कों के आगमन के फलस्वरुप उनके प्रभाव, अपसंस्कृति अथवा डर से भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति निम्न से निम्नतर होती चली गई। उसी समय अरब/तुर्क गुलाम वंश की शासिका रजिया सुल्तान ने भारत में सुल्तान का पद ग्रहण करके जो अपवाद एवं साहस दिखाया, वह लंबे समय से चली आ रही भारतीय एवं मुस्लिम सामाजिक प्रथा पर महिला सशक्तिकरण का प्रहार एवं जीवंत उदाहरण बना। रजिया सुल्तान अरब/तुर्क मोहम्मद गौरी विजित एवं उसके गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा स्थापित एवं विस्तारित गुलाम वंश के द्वितीय सुल्तान इल्तुतमिश की पुत्री थी। प्रस्तुत शोधपत्र में मध्यकालीन मुस्लिम शासित भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण का रजिया सुल्तान के विशेष संदर्भ में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– पितृसत्तात्मकता, भारतीय समाज, महिला सशक्तिकरण, मुस्लिम सामाजिक प्रथा, अपवाद, साहस , भारतीय संस्कृति ।

प्रस्तावना – विश्व की प्राचीनतम संस्कृति में शुमार भारतीय संस्कृति में जहां मातृशक्ति को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त रहा, लेकिन कुछ अपवादों को छोड़कर राजकीय कार्यों एवं अधिकारों का वर्णन नहीं मिलता, अर्थात पितृसत्तात्मकता भारतीय समाज की पुरातन विशेषता रही है, जिसके आधार पर भारतीय समाज की संरचनात्मकता एवं प्रकार्यात्मकता दोनों का निर्धारण होता रहा है। इस व्यवस्था ने लम्बे समय तक समाज में महिलाओं को हाशिये पर तथा उपेक्षित रखा है। साथ ही, अगर ऐतिहासिक संदर्भ में देखा जाए तो ऐतिहासिक कालक्रम में समय–समय पर कई ऐसी घटनाएं होती रही है जिसने समाज की पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती देने का कार्य किया है। मध्यकाल के शुरुआत से ही भारतीय मुस्लिम शासित समाज में स्त्रियों की स्थिति निम्न से निम्नतर होती चली गयी। फिर भी मध्यकालीन दौर में कई ऐसी महिला शासिकाओं का उदाहरण मिलता है, जिसने उस समय की पितृसत्तात्मक व्यवस्था की बाधाओं को तोड़ते हुए एवं तत्कालीन चुनौतियों को स्वीकार करते हुए आगे बढ़कर समाज में अपने नेतृत्व कौशल का परिचय दिया है। इसमें एक प्रमुख नाम रजिया सुल्तान का है। सिराज जुजजानी ने लिखा, "रजिया सुल्तान एक महान सम्राट थीं। वह बुद्धिमान, न्यायप्रिय और उदार शासक थीं जिन्होंने अपने लोगों की भलाई के लिए बहुत काम किए। एक अच्छे राजा में जितने भी गुण होने चाहिए थे वह सब उनमें थे। बस उनका एक ही दोष था कि वह पुरुष नहीं थीं, इसलिए पुरुषों की नजर में उनके इन गुणों की कोई कीमत नहीं थी" (फजल, रेहान, 2025)।

इतिहास के लेखन में समाज के हाशिए एवं उपेक्षित तबकों के कृत्यों एवं उनके स्वरों की बहुध्वनि की अवहेलना करने की प्रघटना काफी जटिल रही हैं, क्योंकि उनकी कहानी को इमानदारी के साथ दर्ज नहीं किया जाता रहा है। तीन हजार साल के इतिहास में, यह कहानियाँ अभिजात वर्ग की भाषा में कही जाती रही हैं, जो हर बार किसी नई शक्ति के आगमन के साथ बदल गई है। इसके अलावा, यह प्रत्येक व्यक्तिपरक लेखक की दृष्टि से विकृत होता रहा है। इसलिए ब्रिटिश वृत्तांत हरम और मुस्लिम महिलाओं के बारे में उनके 'प्राच्यवादी' दृष्टिकोण से अपरिवर्तनीय रूप से प्रभावित हैं। जहाँ भी इतिहास लिखा जाता है, वह स्वाभाविक रूप से विजेता का होता है। इतिहासकार इरा मुखोटी अपनी किताब 'हीरोइंस, पावरफुल इंडियन वीमेन ऑफ मिथ एंड हिस्ट्री' में लिखती हैं, उस जमाने के जीवनीकार पुरुषों का वर्णन भी बहुत बारीकी से नहीं करते थे। जहाँ तक महिलाओं के वर्णन की बात है वह ज्यादातर या तो चुप रहते थे या बहुत सी बातें छिपा जाते थे (Mukhoty, 2017)।

मध्यकालीन शासिकाओं में रजिया सुल्तान का प्रमुख स्थान है। इन्होंने अपने नेतृत्व कौशल एवं कूटनीतिक क्षमता से उस दौर में स्वयं का लोहा मनवाते हुए खुद को स्थापित किया, जब चौतरफा व्याप्त पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था को चुनौती देना कल्पना से परे प्रतीत होता था। चुनौतियों को स्वीकार करते हुए उसने अपने शासन को बहुमूल्य बनाया। रजिया सुल्तान का शासन काल वर्ष 1236 से 1240 तक मात्र 4 वर्षों का रहा लेकिन इस दौरान उसने अनेक उपलब्धियों को प्राप्त करने का कार्य किया। प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यकालीन भारतीय समाज में नारी सशक्तिकरण की पर्याय तुर्क मुस्लिम शासिका रजिया सुल्तान के माध्यम से पुरुषवादी दृष्टिकोण को आईना दिखाने का प्रयास किया गया है।

रजिया एवं पितृसत्तात्मकता –दिल्ली सल्तनत के शासनकाल में भी पितृसत्तात्मक व्यवस्था अपने चरम रूप में दिखती है। प्रारंभ में इल्तुतमिश अपने सबसे बड़े पुत्र नसीरुद्दीन महमूद को शासक बनाना चाहता था, जो कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था के स्वरूप को इंगित करता है, लेकिन नसरुद्दीन महमूद जो उसका सबसे बड़ा पुत्र था, की 1229 ई. में आकस्मिक रूप से मृत्यु हो गई। ऐसी स्थिति में इल्तुतमिश ने 1231 ई. में अपने ग्वालियर अभियान के दौरान अपनी पुत्री रजिया को दिल्ली की कमान सौंप कर अपने अभियान के लिए ग्वालियर रवाना हुआ। ग्वालियर अभियान से लौटने के बाद रजिया के प्रशासकीय नेतृत्व से प्रभावित होकर उसने रजिया को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया (निजामी, 1992)। इस प्रकार, मात्र इकत्तीस वर्ष की उम्र में अविवाहित रजिया, दिल्ली सल्तनत की प्रथम एवं एकमात्र महिला शासिका बनी (Shahla, 2020)।

रजिया के सुल्तान घोषित घोषित किए जाने को लेकर तत्कालीन अमीर एवं उमरा वर्ग ने इस पर आपत्ति जाहिर की, जिसके जवाब में इल्तुतमिश ने कहा कि रजिया उसके पुत्रों की तुलना में अधिक योग्य है। अतः उसने उसे अपना उत्तराधिकारी

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

नियुक्त किया है (निजामी, 1992)। इल्तुतमिश की 1236 ई. में मृत्यु के बाद अमीरों ने इल्तुतमिश के ही पुत्र रुकनुद्दीन फिरोज को नया शासक घोषित किया। उसका यह फैसला पूर्णता पितृसत्तात्मक व्यवस्थाके प्रति उसके रूझान को दर्शाता है। जैसा कि माना जाता है कि इल्तुतमिश अपने शासन के अंतिम वर्ष में रूकनुद्दीन को उत्तराधिकारी घोषित करने के लिए सहमत हुआ। यह कहीं न कहीं पितृसत्तात्मक व्यवस्था को लेकर उस समय की जनता की मानसिकता को दर्शाता है, साथ ही तत्कालीन पुरुष वर्चस्ववादी अमीर एवं उलेमा वर्ग के इल्तुतमिश पर भी प्रभाव को दर्शाता है, जो कि किसी महिला को उत्तराधिकारी घोषित किए जाने के विरुद्ध थे। रुकनुद्दीन एक अयोग्य एवं विलासी शासक था। अतः उसके शासनकाल में सत्ता उसकी मां शाहतुर्काना के हाथों में थी।

रूकनुद्दीन के करीबी तुर्क नोबेल उसके शासक बनते ही गैर तुर्कों की हत्या करने लगे। जुनैदी के पुत्र जिया उल मुल्क एवं ताजुल मोहम्मद जैसे गैर तुर्क (ताजिक) अमीरों की हत्या कर दी गई। ऐसी स्थिति में दिल्ली की जामा मस्जिद में नमाज के दौरान रजिया लाल वस्त्र पहनकर जनता के समक्ष उपस्थित हुई और उसने जनता से न्याय की अपील की, जो कहीं न कहीं पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती थी और ऐसी स्थिति में जनता ने रुकनुद्दीन को उसके महल में कैद कर लिया। लापरवाह रुकनुद्दीन के खिलाफ जनता का आक्रोश इस सीमा तक हो गया कि रुकनुद्दीन और उसकी मां शाहतुर्काना की हत्या कर दी गई (सतीश चन्द्र, 2007), और रजिया को दिल्ली सल्तनत के शासन की बागडोर सौंपी। रजिया को इस प्रकार दिल्ली सल्तनत की पहली महिला शासिका बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

रूकनुद्दीन का शासन 7 महीने से भी कम का रहा। 14वीं सदी में लिखित पुस्तक "फुतूह उस सलातीन" के अनुसार उसने जनता को वादा किया कि अगर वह लोगों की आकांक्षाओं को पूर्ण करने में सफल नहीं हो पाई तो उसे जनता गद्दी से हटा दे। प्रारंभ में रजिया को तत्कालीन अमीर वर्ग का प्रतिरोध झेलना पड़ा जो कि कहीं ना कहीं पितृससत्तात्मक व्यवस्था को उसके चुनौती दिए जाने के कारण था। उसने प्रारंभ में ही तुर्क अमीरों के जगह पर गैर तुर्क अमीरों का एक वर्ग तैयार करना प्रारंभ किया, लेकिन यह कार्य उसके लिए आसान नहीं था, क्योंकि तुर्कों के साथ– साथ प्रभावशाली गैर–तुर्क अमीरों ने भी उसका विरोध किया जिसमें उसका वजीर निजाम उल मुल्क जुनैदी जो गैर तुर्क था, उसने भी रजिया की सत्ता को चुनौती दी। इसके अलावा बदायूं, मुल्तान, हांसी लाहौर आदि जगहों के अमीर भी रजिया के खिलाफ खड़े हुए और इन सभी ने किसी न किसी प्रकार से उसको स्थापित करने का प्रयास किया, लेकिन कुछ समय बाद मोहम्मद सलारी एवं अयाज खान जैसे अमीरों ने रजिया का साथ दिया। बाकी अमीरों के खिलाफ अभियान चलाकर रजिया ने उन सब की हत्या कर दी। जुनैदी को अंततः भाग कर पहाड़ियों में शरण लेना पड़ा, जहां उसकी मृत्यु हो गई। रजिया ने गद्दी संभालने के बाद अपने मन मुताबिक लोगों की पदों पर नियुक्ति की जिसमें जमालुद्दीन याकूत एवं एतिगीन का नाम प्रमुख रूप से आता है जो कि रजिया के करीबी एवं विश्ववस्त थे। मिनहाज के अनुसार पूर्व में लखनौती से लेकर पश्चिम में देवल तक जल्द ही सभी अमीरों ने उसकी सत्ता स्वीकार कर ली।

प्रारंभ में रजिया ने सिक्कें अपने पिता के नाम से जारी किए जो कि उसके किसी न किसी प्रकार से पितृसत्तात्मक व्यवस्था के प्रभाव को दिखलाते थे, लेकिन 1237–38 से रजिया ने अपने नाम से सिक्का जारी करना प्रारंभ कर दिया। यह किसी न किसी प्रकार से पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती थी, जिस कारण से अमीर वर्ग उससे रुष्ट हो गए। इसामी के अनुसार रजिया प्रारंभ में शासन पर्दे में रहकर करती थी लेकिन कुछ समय बाद उसने पुरुषों के ड्रेस कबा एवं कुलाह पहन कर दरबार में आने लगी। रजिया पूर्व के पुरुष शासकों की तरह हाथी पर चढ़कर दिल्ली की गलियों की यात्रा की जो कि उसके चारित्रिक मजबूती को दर्शाता है। इसी प्रकार उसने उच्च पदों पर तुर्कों की जगह पर गैर तुर्कों की नियुक्ति की और उन्हें उच्च पदों पर आसीन किया, जैसे अमीर ए आखूर (अश्वशाला का प्रधान) के पद पर अपने करीबी जमालुद्दीन याकूत की नियुक्ति की। सरहिंदी, बदायूंनी, फरिश्ता, निजामुद्दीन अहमद जैसे इतिहासकार रजिया के याकूत से नजदीकी को उसके पतन का कारण मानते हैं। रजिया ने प्रारंभ में इल्तुतमिश द्वारा खरीदे गए दास एतिगीन एवं अल्तूनिया को भी उच्च पद प्रदान किया, लेकिन आगे अल्तूनिया ने उसके खिलाफ विद्रोह कर दिया जो कि सिर्फ उसके महिला होने के कारण उसे मंजूर नहीं था। फलतः अल्तूनिया के विद्रोह को दबाने के लिए रजिया ने तवर हिंद का अभियान किया, जहां पर रजिया के करीबी जमालुद्दीन याकूत की हत्या कर दी गई और रजिया को कैद कर लिया गया। रजिया को कैद करने के बाद कहीं ना कहीं अल्तूनिया की पितृसत्तात्मक सोच हावी थी और उसने उसे एक महिला के रूप में देखा था और उसकी सुंदरता से बहुत ही प्रभावित था। अतः उसने उससे शादी का प्रस्ताव रखा। लेकिन इसमें कहीं ना कहीं उसकी कूटनीतिक चाल भी थी क्योंकि वह रजिया के खिलाफ दिल्ली में बनाये गये गुट में अपने लिए कोई सर्वोच्च पद नहीं प्राप्त कर पा रहा था।

अतः ऐसी स्थिति में उसने रजिया से शादी कर ली और तत्कालीन दिल्ली में बहरामशाह जिसने रजिया के खिलाफ अपने आप को शासक घोषित कर लिया था, के खिलाफ मिलकर अभियान किया। लेकिन इस अभियान में रजिया एवं अल्तूनिया की संयुक्त सेना को तत्कालीन दिल्ली के घोषित शासक बहराम शाह ने पराजित कर दिया। मिनहाज उस सिराज के अनुसार रजिया ने मात्र 3 वर्ष 6 माह और 6 दिन का शासन किया लेकिन उसका शासन काल इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो गया। मिनहाज के अनुसार रजिया में शासक बनने के सभी गुण मौजूद थे सिर्फ उसमें एक अवगुण था और वह था उसका महिला होना। इस प्रकार रजिया का शासन काल कहीं ना कहीं दिल्ली सल्तनत में उसके रणनीतिक नेतृत्व एवं उसके सर्वोच्च गुणों के कारण महत्वपूर्ण था और प्रमुख विरोध उसके महिला होने के कारण था जो कि पुरुष वर्चस्ववादी समाज को स्वीकार नहीं था। इस इस कार्य में चाहे अमीर वर्ग हो, चाहे उसके प्रशासनिक अमला हो, चाहे उलेमा वर्ग हो, सभी ने उसके महिला होने के कारण इसका विरोध किया। सिर्फ उसने अपने नेतृत्व कौशल, प्रशासकीय क्षमता एवं कूटनीतिक दूरदर्शिता का परिचय देते हुए अपने शासन को चलाने में कामयाब हुई, लेकिन कहीं ना कहीं यह बातें पितृसत्तात्मक सोच वाले मौजूद लोगों को मंजूर नहीं थी।

अतः उन सब ने उसे गद्दी से हटाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस प्रकार रजिया का शासन समाप्त हो गया और इसी सोच का नतीजा था कि पूरे दिल्ली सल्तनत के शासनकाल में रजिया के अलावा कोई अन्य महिला शासक दिल्ली की गद्दी पर आसीन नहीं हो पाई। केवल दिल्ली सल्तनत ही नहीं, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया में रजिया को महिला शासक के रूप में स्थापित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

रजिया का शासिका बनना उस समय के इस्लामिक परंपरा एवं रिवाज के विरुद्ध था तथा शासन के प्रारंभ से ही उसे प्रांतीय शासकों एवं अमीरों के विरोध का सामना करना पड़ा (Habib & Nizami, 1970)। प्रसिद्ध इतिहासकार मिन्हाज ने लिखा है कि

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

रजिया एक सफल शासक के सभी प्रशंसनीय गुणों तथा योग्यताओं से परिपूर्ण थी, किंतु दुर्भाग्य से वह एक स्त्री थी (Lanepoole, 2021)

निष्कर्ष – इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों एवं साक्ष्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति में लंबे समय तक मातृ प्रधान एवं महिला सम्मानित समाज संपन्न रहा है, लेकिन लेकिन कहीं ना कहीं अन्य संस्कृतियों की बात यहां भी उच्च स्तरीय निर्णय एवं नेतृत्व व राजकीय कार्यों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम ही रहा है। उत्तर वैदिक कालीन समाज व्यवस्था तो पूर्णतः पुरूष प्रधान बन गयी। आठवीं सदी के पूर्वार्ध से ही अरब तुर्क एवं बाद में मंगोल आक्रांताओं एवं शासकों में यह स्थिति और भी बदतर होती चली गई। चूंकि कबीलाई आक्रांता जातियों में महिलाओं की स्थिति शुरू से ही दयनीय रही है। इसी संक्रमण काल में गुलाम वंश की एक महिला दिल्ली सल्तनत के सुल्तान पद पर अपनी अपूर्व योग्यता एवं नेतृत्व क्षमता के आधार पर आसीन होती है। जिसके विरोध में तत्कालीन तुर्क सरदार, उलेमा जमात एवं शासकीय पुरुष वर्ग द्वारा कई विद्रोहों का सामना करना पड़ा। अपनी अपूर्व नेतृत्व क्षमता दूरदर्शिता गुणों से उसने उनका सामना करते हुए एक सफल शासन चलाया लेकिन केवल महिला होने के कारण सत्ता के साथ साथ प्राण भी गवाने पड़े, जोकि तत्कालीन पुरुषप्रधान समाज पर एक कलंक माना जाता है। आज भी भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण के संदर्भ की ऐतिहासिक फेहरिस्त में सम्मानित स्थान प्राप्त है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Habib, Mohammad & Nizami, Khaliq Ahmad (Ed.)(1970), Comprehensive History of India, Volume Five, The Delhi Sultanat (A-D- 1206-1526), People's Publishing House, Delhi.
2. Haeri S. (2020), Razia Sultan of India: "Queen of the World Bilqis-i Jihan." In: The Unforgettable Queens of Islam: Succession, Authority, Gender. Cambridge University Press, pp. 106-138.
3. Ira Mukhoty, Ira (2017), Heroines: Powerful Indian Women of Myth and History, Aleph Book Company, New Delhi.
4 Lane-Poole, Stanley (2021), Medieval India, Gyan Publishing House, New Delhi.
5 फजल, रेहान (2025), रजिया सुल्तानः सौतेले भाई का तख्तापलट कर जब दिल्ली की पहली मुस्लिम महिला शासक बनीं– विवेचना, बीबीसी हिंदी, 27 जुलाई 2025.
6 यादव, शैलेन्द्र कुमार (2017), भारतीय महिलाओं का शोषणः वैदिक काल से अब तक, IJSRST, अंक– 3, भाग– 07, पृष्ठ– 1246–49.
7 संतीश चंद्र (2007), मध्यकालीन भारत (800 से 1700), Orient Longman] New Delhi.

*****